Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

प्राचीन काल में कुषाणकालीन आर्थिक दशा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Sonu Kumar*

M.Phil in History, MDU, Rohtak

सार – भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में कुषाणों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कुषाणवंशी राजाओं ने मौर्य-साम्राज्य के पश्चात् आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनके द्वारा निर्मित साम्राज्य के परिणामस्वरूप विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनके द्वारा निर्मित साम्राज्य के परिणामस्वरूप विभिन्न क्षेत्रों के लोग एक-दूसरे के सम्पर्क में आए। मध्य एशिया में भारतीयों का सम्बन्ध अब और भी घनिष्ठ हो गया और व्यापार की प्रगति हुई।

---------------------------------X---------------------------------

वाणिज्य-व्यासपार में प्रगति का प्रमुख कारण यह था कि कुषाण साम्राज्य से होकर ही उस समय दो प्रमुख व्यापारिक मार्ग उतरापथ एवं रेशम मार्ग गुजरते थे। व्यापार के दृष्टिकोण से कुषाण वंश के प्रतापी राजा कनिष्क ने अपना राज्य पटना तक फैलाया था। उज्जैन पर भी उसका अधिकार था। पश्चिम भारत में भरूकच्छ या भड़ौच तक उसने अपने राज्य का विस्तार किया था। उत्तर-पश्चिम में पंजाब और कपिश उसके अधिकार में थे। हिन्दुकुश के उत्तर में उनका राज्य बहुत दूर तक फैला था। उपर्युक्त सारे नगर व्यापार के दृष्टिकोण से काफी प्रसिद्ध थे जो चीन को पश्चिम से जोड़ते थै और जिन पर होकर व्यापारी जाया करते थे। कुषाण सेना ने पूरब में पामीर के दर्रो पर कब्जा किया और भारतीय उपनिवेश बसाए। इस तरह भारत के तालिक की हैसियत से उन्होनें दोनों कौशेयपथ पर कब्जा कर लिया। काशगर में चलने वाले उत्तरी कौशेय पथों पर कुषाणों ने बहुत से वैसे ही उपनिवेश बसाए जैसे उन्होंने दक्षिणी रास्ते पर बसाए थे। सुग्ध के क्षेत्र में व्यापार करने वालों में सभी धर्म के माननेवाले थे जैसे-जर्थुस्ट्री, बौद्ध, मनीरबी, ईसाई इत्यादि।

इस काल में कुषाणों और रोमन साम्राज्य का सम्बन्ध काफी दृढ़ हुआ। कुषाणों के अधिकृत राजमार्गों से चलते हुए चीनी बर्तन, चीन के बने रेशमी कपड़े, हाथीदाँत, कीमती रत्न, मसाले तथा सूती कपड़े रोम को जाने लगे और रोमन साम्राज्य का सोना कुषाण साम्राज्य में आने लगा। कनिष्क के समय भारत के धन का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि कनिष्क से अधिक और किसी के सोने के सिक्के आज भी भारत में नहीं मिलते। ये सोने के सिक्के रोमन डिनारीयस के आधार पर बने होते थे और उसका भार 124 ग्रेन था। इस काल में व्यापारिक दृष्टि से कुषाणों ने यूनानी सिक्कों का नकल करना ठीक समझा। कनिष्ठ के सिक्कों की पुष्ठ भाग में ईरानी, यूनानी तथा भारतीय देवी-देवताओं के चित्र मिलते है। वाख्त्री सूनानी उस देवता का नाम मिलता है। भारतीय लिपियों को कोई स्थान नहीं दिया गया, जिसका कारण यह मालूम पड़ता है कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में कनिष्क के सिक्के प्रचलित थे। उत्तर-पश्चिम में यूरोप तक इसके सिक्कों का विनिमय अवश्य था। अतः यूनानी लिपि को ही रखना उचित समझा गया । ग्रीक देवी की आकृति के साथ ननैया नाम मिलता है। हुविष्क के सिक्कों के पृष्ठ भाग पर भी कनिष्क के सिक्कों की तरह विभिन्न देवताओं के चित्र मिलते है।

ऐसा लगता है कि कनिष्क की प्रजा रोमन माल की भी शौकीन थी। बेग्राम में हैंके की खुदाई से यह पता लगता है कि रोम से कुछ माल भारत और चीन को जाता था। कुषाण अधिकृत सड़कों से रोम को जानेवाले माल का इतना अधिक दाम होता था कि रोम ने चीन से सीधा सम्बन्ध करने का प्रयन्न किया।

कुषाणों का संचालन बहुत तरकीब से होता था। इस समय महापथ पर भी कुछ हेर-फेर हुए। इतिहास में सबसे पहली बार गंगा से मध्य एशिया तक जाता हुआ यह महापथ एक राजसत्ता के अधीन हो गया। इस महापथ का एक टुकड़ा कुषाणों की नई राजधानी पेशावर से होकर खैबर तक जाता था। तक्षशिला में शिरसुख पर कुषाणों की नई नगरी बसाई

पर इसे महापथ के रूप में कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ा। कपिश, नगरहार और बलख की स्थिति भी नहीं बदली थी। व्यापारिक दृष्टि से ये स्थान पहले से भी अधिक समृद्ध थे।

महान कुषाण साम्राज्य के पतन के बाद इतनी व्यापक अर्थिक समृद्धता जारी नहीं रही। मुद्रा-शास्त्रीय साक्ष्यों से उपरोक्त ह्रास अत्यन्त स्पष्ट हो जाता है। साधंन स्त्रोतों के विघटन के फलस्वरूप महान कुषाणों के उत्तराधिकारियों को अपने निजी क्षेत्रीय राजस्व पर ही आश्रित होना पड़ा। यह केवल राज्य की ही हानि नहीं थी, अपितु सामान्य रूप से जनता की भी हानि थी और इसका प्रभाव हमें तत्कालीन सभ्यता की पतनोन्मुख प्रकृति में दृष्टिगोचन होता है।

कुषाण सभ्यता में संगठित होने एवं विकास करने की विलक्षणता थी, जिसका शुभारम्भ इस क्षेत्र में कुषाण शासन की स्थापना के तुरन्त बाद ही हो गया था। कुषाणों से पूर्व ही कुछ शताब्दियों के दौरान यहाँ अत्यन्त अशान्ति थी। वैक्ट्रियाई यूनानियों, सीथियन एवं पार्थियनों का शासन तो अनेक वंशों का केवल एक समय बिताने का चरण काल था, जबकि पश्चिम एशिया के अवरूद्ध सम्पर्को ने स्थायी सामाजिक संस्थानों को विकसित नहीं होने दिया। इससे पूर्व भी मौर्य युग के दौरान बौद्ध धर्म की स्थापना गान्धार में हो तो चुकी थी, किन्तु तक्षशिला के विद्रोह से स्पष्ट हो जाता है कि राजनीतिक उपद्रव पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हो पाए थे। यहाँ तक कि सिकन्दर महान की विजयों ने भी शान्ति के यूग का उद्घाटन नहीं किया था। उसकी प्रगति के दौरान की सेना के पिछले भाग में हुए उपद्रव तथा उसकी मृत्यु के तुरन्त बाद उसके शासन का अन्त हो जाने से तत्कालीन राजनीतिक राजनीतिक स्थिति का संकेत मिलता है। आखिर सिकन्दर भी तो उन्हीं क्षेत्रों पर अपना आधिपत्य जमाता हुआ आ रहा था, जो कुछ समय पूर्व ही ऐकेमीनियनों के अधीन रहे थे। अपने लगभग 200 वर्षीय शासनकाल के दौरान इन ऐकेमीनियन ईरानियों ने एक सुदृढ़ प्रशासनिक प्रणाली की स्थापना की थी, सड़कों का निर्माण किया, भौगोलिक गवेषणाएँ कीं, मुद्रा प्रणाली एवं अपने माप-तौल मानकों को आरम्भ किया, डाक हरकारे नियुक्त किए एवं अन्य अनेक प्रशासनिक कदम उठाए जिनके परिणाम अब उत्खननों के दौरान स्पष्ट होते हैं। ऐकेमीनियन छाप उस प्रत्येक परम्परा में दुष्टिगोचन होती है जो कुषाणों को विरासत में मिली थी, किन्तु स्थायी एवं लोकहितकारी जीवन ढाँचे कि पुनर्निर्माण का कार्य कुषाणों ने किया था। उनके लिए ऐसा करना सम्भव भी था, क्योकि वे उस समय आए, जबकि किसी भी महान राजनीतिक शक्ति का विद्रोह उनके संगठन कार्य के मार्ग में अवरोध नहीं बना। चूँकि राजनीतिक दष्टि से उत्तरी भारत अनेक शक्तियों में विभक्त था और ईरान पर भी साम्राज्यिक रोम के सतत प्रहार हो रहे थे अतः कुषाण आगे बढ़ सके और उन्होंने मध्य एशिया के एक बडे क्षेत्र को अपने अधीन कर लिया। वह द्वितीयः कुषाण सम्राट अर्थात विम कैडफाइसिस के शासनकाल में हुआ। विम पहले ही अपने पिता कैडफाइसिस के काल में अपनी योग्यताओं का प्रदर्शित कर चुका था। यदि कुजुल का शासन काल विजयों तथा मुद्रा प्रणाली एवं सामाजिक संस्थानों में किए गए अन्य अनेक प्रयोगों का काल था तो विम का काल प्रगति एवं मानकीकरण का अग्रदूत था। इन दोनों को मिलाकर कुषाण सम्राटों का प्रथम समूह बनता है। उन्हीं के शासन काल के दौरान पहली बार कला के नए रूपों का दर्शन हुआ। विम के सिक्कों में नए प्रकार की चित्राकृति का आविर्भाव हुआ और शिव एवं वृषभ की नई डिजाइन का विकास हुआ। इन सबके अतिरिक्त मथुरा के निकट माट के अवशेषों में पहली बार सम्राटों की मूर्तियाँ मिलीं। ये मूर्तियाँ ठीक उसी शैली में हैं, जो सिक्कों पर अंकित चित्राकृतियों में दृष्टिगोचर होती हैं। हमें कनिष्क की भी एक खड़ी हुई प्रतिमा मिली है, जो उन सिक्कों में पाई जानेवाली विख्यात आकृति जैसी ही है। पुनश्च इन्हीं शासकों के शासनकाल के दौरान चारसद्धा के निकट शैरवान ठेरी में पुष्कलावती की दूसरी नगरी और सम्भवतः तक्षशिला में सिरकप जैसी प्राचीन नगरियों का पुनर्निमाण हुआ था। यदि चीनी यात्रियों के वर्णन का विश्वास किया जाए तो प्रथम कुषाण सम्राट ने पेशावर में एक स्तूप एवं मठ भी बनवाया था।

किन्तु कुषाण सम्राटों ने कनिष्ठ से आरम्भ होने वाले दूसरे समूह के शासकों के शासनकाल में ही कुषाण सभ्यता के आधारभूत स्वरूप की स्थापना की थी। सामान्य इतिहास की पुस्तकों मंे गान्धार कला की चर्चा मिलती है, जिसे यूनानी अथवा रोमन शिल्पियों को कला का नमूना मानते हुए अनिच्छापूर्वक ही कुषाण कहा जाता है।

सर्वप्रथम तो यह दृष्टव्य है कि कनिष्क ने काल गणना की एक नई प्रणाली आरम्भ करने का प्रयास किया। यद्यपि यह विवादास्पदा है कि यह प्रणाली शक संवत् ही थी अथवा नहीं, किन्तु यह निश्चित है कि यह प्रणाली अन्तिम कुषाण सम्राट अर्थात् वासुदेव के शासन काल तक जारी रही । इस बात के भी प्रमाण मिलते हैं कि गंगा की घाटी एवं नेपाल में अन्य शासकों ने भी इस बात के भी प्रमाण मिलते हैं कि गंगा की घाटी एवं नेपाल में अन्य शासकों ने भी इस प्रणाली का अनुसरण किया था। किन्तु काल गणना की इस प्रणाली के सही रूप के बारे में विद्वानों में सहमति नहीं है। किन्तु नवीन कुषाण ध्वनियों को अभिव्यक्त करने के लिए इस लिपि में

कुछ नए अक्षरों का विकास करने का प्रयास भी झलकता है। इस सन्दर्भ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण पी अक्षर ष का विकास हैं। हम पहले ही इस काल की खरोष्ठी लिपि के अक्षरों में हुए ऐसे ही परिवर्तनों का उल्लेख कर चुके हैं। इस विकासात्मक प्रक्रिया से स्पष्ट होता है कि कुषाण सम्राटों का यह केवल प्राचीन परम्पराओं का अन्धानुकरण नहीं कर रहा था, अपितु उन्हें अपनी आवश्यकताओं के अनूरूप ढाल रहा था। जब हम विम कैडफाअसिस एवं अन्य पूर्ववर्ती शासकों द्वारा धारण की गई शाही उपाधियों की तुलना कुषाण सम्राटों के दूसरे समूह के शासकों की उपाधियाँ से करते हैं तो उपरोक्त परिवर्तन अत्यन्त स्पष्ट हो जाता है जबकि विम ने साधारण सूनान उपाधि बेसीलियस अथवा उसका पूर्ण रूप अर्थात् ‘बेसीलियोन सोटेर मेगास’ धारण किया था। कनिष्क ने अपने आरम्भिक सिक्कों पर बेसीलियोन का प्रयोग करने के पश्चात् तुरन्त ही उसका त्याग कर दिया। उसके काल से एक नई उपाधि ‘शाओननों शाओं’ आरम्भ हुई, जो आज भी शहनशाह के रूप में प्रयोग की जाती है। निस्सन्देह इसकी उत्पति डेरियस के अभिलेखों में प्रयुक्त एकेमीनियम सम्राटों की ‘ख्शमिथियनपम ख्शयथिम‘ रूपी शाही उपाधि में देखी जा सकती है। कुषाण सम्राटों द्वारा पुनरूज्जीवित यह शाही परम्परा उनके शासनकाल के अन्त तक जारी रही और हम देखते हैं कि समुद्रगुप्त ने भी अपने इलाहाबाद स्तम्भ अभिलेख में इस क्षेत्र के शासकों को षाहि षाहानुषाहि कहा है। यहाँ तक कि हूणों ने भी अपने सिक्कों में षाहि उपाधि का प्रयोग किया है। गान्धार के उत्तरकालीन नरेशों की उपधि भी वही शाह थी, और राजतरंगिणी में सर्वत्र ही उनके साम्रात्य का ‘शाहि राज्य’ कहा गया है। 1030 ई॰ जैसे परवर्ती काल में भी अलबेरूनी ने शाहिया साम्राज्य एवं बिन्दु शाहिया वंश का उल्लेख किया है। यह आवश्यक नहीं है कि इस उपाधि का सम्बध उन मुस्लिम सुल्तानों से जोड़ा जाए जो शाह, शहनशाह अथवा बादशाह, पादशाह आदि उपाधियाँ धारण करने के लिए विख्यात हैं। किन्तु यह दृष्टव्य है कि डीर में कुछ ऐसे स्त्रोत हैं जिनके नाम शाही, बिनशाही एवं हिन्दू राज है और जो इस उपाधि की याद दिलाते हैं। यह चिरप्रतिष्ठित शाही परम्परा कुषाण सभ्यता का एक मूलभूत अंग थी।

कुछ कुषाण अभिलेखों में पाई जाने वाली दूसरी महत्वपूर्ण उपाधि ‘देवपुत्र‘ है, जिसका अर्थ है, ‘भगवान का पुत्र।‘ इसकी उत्पति का विवेचन तो नहीं किया गया है, किन्तु इस क्षेत्र की राजनीतिक - धार्मिक अवधारणा में इसका उत्यन्त स्थायी महत्व है। इस उपाधि के स्वाभाविक परिणाम के फलस्वरूप ही हम देखते हैं कि कुषाण सम्राटों के दूसरे समूह के शासकों के सिक्को में उनकी मुखाकृवियों में सिर के चारों ओर एक प्रमंडल दृष्टिगोचर होता है। इसी भावना के अनुरूप सिक्कों पर अंकित देवी-देवताओं को भी ऐसे प्रमंण्डल से युक्त दिखाया गया है । बुद्ध की मुतियों में भी यही प्रभामंण्डल दृष्टिगोचर होता है । चुंकि विश्व की प्रचीन कला में प्रभामंण्डल का चित्रण व्यापक रूप में मिलता है अतः किसी क्षेत्र विशेष में उसकी प्राथमिकता का विवेचन करना आवश्यक नहीं है। किन्तु यह जान लेना आवश्यक है कि आरम्भिक मुस्लिम चित्रकंला में यह प्रभामंण्डल सिर के अलंकरण का अंग था, और मुगलकालीन चित्रों में भी मुगल सम्राटों के सिर के चारों ओर प्रभामंण्डल दृष्टिगोचर होता है। कुषाण सम्राटो ने बौद्ध धर्म को प्रोत्साहन दिया और सम्भ्वतः उसे निजी धर्म के रूप में स्वीकार भी किया। कुषाणों के शान्तिपूर्ण शासन के दौरान बौद्ध धर्म खूब फला-फूला। बुद्ध का चित्रांकन केवल कनिष्क के सिक्कों में निश्चित रूप से दृष्टिगोचर होता है। किन्तु उसके ही सिक्कों पर अन्य देवी-देवताओं का भी निरूपण मिलता है। कनिष्क को ही एक बौद्ध समा बुलाने का श्रेय दिया जाता है। सभी चीनी यात्री पेशावर के निकट बनाए गए कनिष्ठ बिहार का वर्णन करते हैं। लगभग सभी चीनी कुषण सम्राटों ने अपने सिक्कों में स्वयं को अग्नि को आहुति देते हुए दर्शाया है। उस काल में गान्धार में अग्नि पूजा अज्ञात नहीं थी। वास्तव में हमें अनेक बौद्ध मूर्तियों में अग्नि पूजा का निरूपण दृष्टिगोचर होता है। यदि हम कुषाण सिक्कों पर पाए जानेवाले विभिन्न देवी-देवताओं का विश्लेषण करें तो यह निर्धारित करना कठिन हो जाता है कि विभिन्न कुषाण राजाओं की कृपादृष्टि किस विशेष देवी अथवा देवता पर थी। कनिष्ठ एवं हुविष्क के सिक्कों में सर्वाधिक प्रकार के ऐसे निरूपण मिलते हैं। उनमें भारत, ईरान, मध्य एशिया एवं यूरोप के ग्रीक-रोमन जगत के देवी-देवता सम्मिलित हैं। उनके निरूपण का अर्थ यह नहीं िकवे विभिन्न देशों से ली गई थी, वे तो पिछली विरासत के रूप में पहले से ही कुषाण साम्राज्य में पाई जाती थीं। कुषानों ने तो केवल उन्हें सिक्कों पर उचित स्थान दिया और स्पष्टीकरण के लिए उनके नाम भी दे दिए। यह प्रथा इसमें पहले नहीं अपनाई गई थी। ऐसा प्रतीत होता है कि उस काल तक देवताओं की सभी मूर्तियाँ विषयक विशेषताएँ हासिल कर ली थीं। इन देवताओं में से केवल वृषभान्तिक शिव अथवा केवल वृषभ समृद्धि के प्रतीक श्रृंगो से मुक्त आरदोख्शो देवी ही इस क्षेत्र में एक लम्बी अवधि तक लोकप्रिय रहे। आरदोख्शो देवी ही इस क्षेत्र में एक लम्बी अवधि तक लोकप्रिय रहे। आदोख्शो का अंकन लघु कषाणों के सिक्कों पर मिलता है और साम्राज्यिक गुप्त नरेशों ने भी अपने सिक्कों के लिए इस डिजाइन को उनसे ही ग्रहण किया था। वृषभ की आकृति हूणों के सिक्कों में भी दृष्टिगोचर होता है। यह वृषभ अंकन गोरी सुल्तान मुहम्मद बिन साम के काल तक जारी रहा।

सिक्कों पर विभिन्न देवताओं का अंकन कम-से-कम इस बात का संकेत देता है कि कुषाण सभ्यता के अन्तर्गत विभिन्न धार्मिक शक्तियाँ कार्यशील थीं। यह पूर्ण रूप से ज्ञात नहीं कि बौद्ध धर्म ने किस प्रकार अन्य धर्मो को पछाड़ दिया। सम्भवतः बौद्धों के धर्मप्रचार एवं बौद्ध धर्म में निहित नैतिक मूल्यों पर दिए गए महत्व ने उसके व्यापक विस्तार एवं जनता द्वारा स्वीकरण में सहायता दी होगी। किन्तु यह थोडो समय के लिए ही था। जब हूण आए तब तक शिव भक्ति श्रेष्ठता प्राप्त कर चुकी थी। जैसे द्वितीय कुषाण सम्राट बिम कैडफाइसिस ने अपने को 'महीश्वर' कहा था, उसी प्रकार हूण नरेश मिहिरकुल के बारे में कहा जाता है कि वहे अपना सिर केवल शिव के सामने झुकाता था। हिन्दू शाही राजाओं के आगमन तक तो बौद्ध धर्म लगभग विलुपत हो चुका था। बौद्ध धर्म के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए अलबेरूनी को एक भी बौद्ध नहीं मिला। हमने हाल के चकदारा उत्खननों के दौरान पाया कि एक पूर्ववर्ती बौद्ध स्तूप को ढँककर उसके ऊपर एक हिन्दू घर बनाया गया था। इसी प्रकार चकदारा के प्राचीन दुर्ग में एक बौद्ध अनुष्ठान को निराश्रित कर नए हिन्दू मन्दिर का निर्माण किया गया। किन्तु यह समझना कठिन है कि यह परिवर्तन कैसे हुआ। इस सम्बन्ध में सभी विवरण देना तो हमारे लिए सम्भव न होगा, किन्तु आगे चलकर हम विषय की संक्षिप्त चर्चा करेंगे।

इस बीच यह बाताना आवश्यक है कि भारत में अन्य कौन-कौन से तत्व स्थायी हो गए। इनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण तो वस्त्राभूषण है। हारीति देवी द्वारा पहने जाने वाले कुछ स्वर्ण आभूषण आज भी स्त्रियों के अलंकरण में दृष्टिगोचर होते हैं। किन्तु सर्वाधिक महŸवपूर्ण है, कुषाण सम्राटों द्वारा धारण किए गए लम्बे एवं चुस्त कोट, लम्बी पतलून एवं विशाल जूते।

निस्सन्देह आधुनिक 'शिरवानी' उपरोक्त लम्बे एवं चुस्त कोट से बनी है। 'शिरवानी' पाकिस्तानी राष्ट्रीय वेशभूषा का अगं है। इसी प्रकार से कुषाण सम्राटों द्वारा प्रयुक्त पतलून आज 'शलवारों' के रूप में सम्पूर्ण पाकिस्तान में इसी प्रकार से कुषाण सम्राटों द्वारा प्रयुक्त पतलून आज 'शलवारों' से रूप में सम्पूर्ण पाकिस्तान में अत्सन्त लोकप्रिय और स्त्री एवं पुरूष दोनों उसे धारण करते हैं। प्राचीन चप्पलों, पगड़ी की शैली का प्रचलन भी द्रष्टव्य है। कुषाण सिक्कों एवं मूतियों में पाई जानेवीली ऊँची पीठक की कुर्सियाँ आज भी डेरा इस्माइल खाँ के बाजारों में खरीदी जा सकती हैं। अपने पाठ सीखने के लिए सिद्धार्थ द्वारा प्रयुक्त 'तख्ती' भी आजकल समस्त पाकिस्तान में शिक्षा के प्राथमिक चरण में प्रयोग की जाती है। गान्धार मूर्ति कला में प्रदर्शित, सिद्धार्थ द्वारा अपनी शारीरिक योग्यता की जाँच के लिए कुश्ती की प्रतियोगिता, पंजाब के अखाड़ों में एक सामान्य खेल है। जब हम दैनिक प्रयोग की वस्तुओं के बारे में सोचते हैं, तो हम सर्वप्रथम बैलों द्वारा खीचें जानेवाले हल का उल्लेख कर सकते हैं, जो आज भी उसी रूप मेें चला आ रहा है। शैरवान ढेरी के उत्खननों के दौरान हमें प्राप्त गेहूँ पीसने की हाथ की चक्की भी भारत के ग्रामों में देखी जा सकती है। कुषाण काल में लोकप्रिय नाशपाती के आकार का कलश आजकल सामान्यतया तथा कथित फारसी चक्र द्वारा पानी निकालने के काम में प्रयोग किया जाता है। किनारों पर हत्थों से युक्त सँकरे मुँह का गोल 'सुरादान' आजकल पेशावर क्षेत्र में तरल दही अथवा पानी के प्रयोग में लाया जाता है। दैनिक जीवन की ऐसी अनेक चीजें हैं, जो हमें कुषाण सभ्यता से विरासत में मिली हैं। यह सभ्यता तत्कालीन विकासशील अर्थव्यवस्था पर आधारित थी जो शान्ति की स्थापना तथा कुषाण सम्राटों द्वारा सुरक्षित विश्व व्यापार के नए मागों के खुलने से सम्भव हुई है। अब धीरे-धीरे कुषाण नगरों के उत्खननों से स्थानीय उद्योंगो को दिए गए प्रोत्साहन भी दृष्टिगोचर होने लगे हैं। बेग्राम एवं शेखान ढेरी से जो भी थोड़े से अवशेष प्राप्त हुए हैं, वे सामान्य ही विदेशों से आयात किया जाता था। कुषाण काल के दौरान बड़ी हद तक शहरी केन्द्रो का विकास हुआ। पेशावर की मुख्य घाटी में ऐसे सभी केन्द्र काबुल नदी के उतर में उस प्राचीन मार्ग के किनारे स्थित हैं, जो तक्षशिला से आता हुआ सिन्धु नदी को पार करके हुंड अथवा सलातुरे (स्ताबी तहसील में आधुनिक चारसद्दा) तक पहुँचता था। इस स्थल पर पहुँच यह मार्ग विभिन्न दिशाओं में बँट जाता है। यदि आज भी इन मार्गो पर स्थित नगरी टीलो की गणना की जाए तो यह तथ्य विस्मयकारी लगेगा कि आधुनिक पाकिस्तान में भी पेशावर क्षेत्र में शहरीकरण उस चरण तक नहीं पाया है। यह कुषाणकालीन शहरीकरण औद्योगिक विकास एवं व्यापारिक केन्द्रों पर आधारित था। इन नगरों में सुनिर्मित घर थे और पर्याप्त सामाजिक सुविधाएँ प्राप्त थीं। चीनी चात्रियों द्वारा दिए गए फसलों के उत्पादन से सम्बन्धित वर्णनों से इस बात की पुष्टि होती है कि कृषि को भी वास्तविक प्रोत्साहन दिया जाता था। वे अनाज की फसलों का भी वर्णन करते हैं। पेशावर क्षेत्र के सर्वेक्षण से सम्पूर्ण नदी मार्ग के किनारे-किनारे पाये जानेवाले विस्तृत कृषि क्षेत्र प्रकाश में आए हैं और पहाड़ी ढालों पर ऐसे प्राचीन क्षेत्र देखे गए हैं, जिनमें ऊपर के कृषि क्षेत्रों से नीचे वाले क्षेत्रों में वर्षा के जल को लाने की विभिन्न विधाओं के भी प्रमाण मिलते है। मैदानों में प्रचीन नहरें देखी गई हैं। जहाँ पर ऐसी नहरें नहीं खोदी जा सकीं, वहाँ आज भी पक्की चिनाई के विशाल कुएँ हैं, जो निश्चय ही सिंचाई के लिए प्रयोग किए जाते थे। कुषाण काल के दौरान दरगै दरगै के पूर्व में वर्तर क्षेत्र में सोराने

www.ignited.in

नामक स्थान पर प्राकृतिक चट्टान में एक गहरा कुआँ खोदा गया था। स्थानिय ग्रामीणों को पानी पहुँचाने के लिए इस कुएँ को पुनः चालू किया गया है। भालकन्द एवं डीर प्रान्तों में ऐसे अनेक जलस्त्रोत देखे गए हैं, जिनसे पहाड़ी ढालों के कृषि क्षेत्रों एवं पहाडियों पर ही स्थित अनेक बौद्ध अनुष्ठानों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जल खींचा जाता था। इन स्त्रोतों को पुनः चालू किया गया हैं, तथा जनता को पीने योग्य ताजा पानी पहुंचाने के लिए पुरानी नहरों का पुनः निर्माण किया गया है ऐसे जल स्त्रोत पर आधारित सर्वाधिक महत्वपूर्ण बोद्धा बस्ती तखत ए वाही अर्थात सोने का सिहासन नाम से विख्यात थी अब एक कुषाण सभ्यता के इस आर्थिक आधार का अध्ययन नहीं किया गया है, अभी तक तो इस क्षेत्र में विस्तृत रूप से पाय जाने वाले स्तूपों एवं मठों को ही महत्व दिया गया है किंतु इन धार्मिक अनुष्ठानों के विवरण मानचित्र से स्पष्ट होता है की कुषाण सभ्यता के अंतर्गत जीवन केवल धर्म पर केंन्द्रित ने था अपितु उसका आधार नितांत मानवीय था इसमें कोई संदेह नहीं कि बौद्ध धर्म ने तत्कालीन समाजिक एवं धार्मिक जीवन को नैतिक उत्साह है प्रदान किया किंतु ये धार्मिक अनुष्ठान आर्थिक साधन स्त्रोतों के विकास में वादा नहीं बने। अपने मंदिरों के भंडारों में स्वर्ण एवं धन का संचय करने वाले उत्तररकालीन हिदुओं के विपरीत यह बौद्ध अनुयायी अत्यंत साधारण एवं कम खर्चीला जीवन व्यतीत करते थे।

के भंडार नहीं थे, अपितु निष्ठावान भिक्षुओं के समुदाय को आश्रय प्रदान करते थे और फिर ऐसे मठानुष्ठानों की स्थापना भी कुषि क्षेत्र में नहीं होती थी। स्वात नदी की घाटी में किए गए हमारे सर्वेक्षण से प्रकट होता है कि मैदानों का प्रयोग जुताईवाले क्षेत्रों के रूप में होता था तथा पहाड़ो की चोटियों को बौद्ध केन्द्रों की स्थापना के लिए प्रयोग किया जाता था। इस प्रकार से एक विस्तृत कृषि योग्य क्षेत्र को बेकार जाने से बचा लिया गया।

इस प्रकार कृषि उत्पादन एवं व्यापारिक लाभ द्वारा प्राप्त की गई समृद्धता ने जनजीवन को समृद्ध किया और इसकी अभिव्यक्ति कुषाणों की नगरी सभ्यता में दृष्टिगोचर होती है। जनता की समृद्धि से गान्धार कला का सृजन किया। जब महान कुषाण सम्राट सम्राट जीवित न थे, तब भी जनता के उत्साह तथा भिक्षुओं की निष्ठायुक्त भावना ने कला की सृजनात्मक प्रवृति को बनाए रखा। गान्धार कला कुषाणकालीन सामाजिक एवं धार्मिक उन्माद को ही अभिव्यक्त करती है। वह किराए के शिल्पियों का यान्त्रिक उत्पादन मात्र न थी और न ही अभिव्यक्त करती है। वह किराए के शिल्पियों का यान्त्रिक उत्पादन मात्र न थी और न ही सरकारी मठों की गतिविधियों का परिणाम। यह विचार प्रोफेसर बैंजेमिन रालेंड का है। कुषाण सम्राटों का कोई निजी विशेष धार्मिक अनुष्ठान न था। वे एक विशाल साम्राज्य के स्वामी थे, विभिन्न प्रकार के लोगों पर शासन करते थे, नए व्यापार मार्ग खोलकर उन्होंने उन लोगों को आपस में मिलाया। विश्व के अन्य भागों में होनेवाले विकास कार्यो से उनका प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित किया और अन्ततः उन्हें एक ऐसी सभ्यता की ओर ले गए, जो कुषाण साम्राज्य के अन्त के बाद भी जीवित रही। यदि पाकिस्तान में सामान्य रूप से और गान्धार क्षेत्र में विशेष रूप से मिलनेवाले अवशेषों के आधार पर तत्कालीन सभी विकासात्मक कार्यो का मूल्यांकन करके उन्हें इस काल से पूर्व एवं बाद की ऐतिहासिक प्रगति के विशाल पट्ट पर रखा जाए, तो हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं होगा, कि भारत के प्राचीन इतिहास में कुषाणों का युग एक स्वर्ण युग था। वर्तमान पाकिस्तान सरकार को छोड़कर, न तो कुषाणों का युग एक स्वर्ण युग था। वर्तमान पाकिस्तान सरकार को छोड़कर, न तो कुषाणों का युग एक स्वर्ण युग था। वर्तमान पाकिस्तान सरकार को छोड़कर, न तो कुषाणों का युग एक स्वर्ण युग था। वर्तमान पाकिस्तान सरकार को छोड़कर, न तो कुषाण युग से पहले और न ही उसके बाद आर्थिक साधन स्त्रोंतों का विकास करने का ऐसा प्रयास कभी किया गया, और इस क्षेत्र के लोगों को भी वह समृद्धता कभी प्राप्त न हुई जो कुषाण युग में प्राप्त हुई थी।

यह समृद्धि आक्सस से यमुना एवं पामीर पर्वत श्रृंखला से लेकर अरब सागर तक फैले क्षेत्र के साधन स्त्रोतों के उचित प्रयोग पर आधारित थी। यह विस्तृत क्षेत्र ही महान कुषाणों द्वारा विकसित मध्य एशियाई सभ्यता का अभिधान प्रस्तुत करता है। इस सभ्यता की जड़ें पाकिस्तान की विरासत में स्थायी रूप से अकित हैं। ससानी वंश के नरेशों द्वारा ईरानी जीवन के पुनर्गठन के बाद ही इस सभ्यता को सबसे पहला आघात पश्चिम से लगा। कुषण ससानी शत्रुता ने साम्राज्य के आर्थिक सन्तुलन को नष्ट कर दिया और ससानियों की विलय ने राज्य की प्रशासनिक स्थिरता को डावाँडोल कर दिया। ससानियों ने कुपाण साम्राज्य पर आक्रमण किया और उसे अपने आधिपत्य में ले लिया, किन्तु कुषाण सभ्यता नए शासकों के संरक्षण में जारी रही। यह परिवर्तन अर्देशीर के पुत्र एवं युवराल गवर्नर पेरोज प्रथम के अद्वितीय रजत द्राकम की डिजाइन में दृष्टिगोचर होता है, जिसके पुष्ट भाग पर राजकुमार को 'मजदेशन बगे-पेरोज बजुर्ग कुशानशाह' की उपाधियों से युक्त बुद्ध के आराधक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ससानी अतिक्रमण के फलस्वरूप वंश परिवर्तन हुआ और हम देखते हैं कि चैथी एवं पाँचवी शताब्दियों में लघु कुषाण एवं किडरवंशी सत्ता रूढ़ हुए। उनके काल में भी प्र्राचीन सभ्यता जारी रही जिन्तु ससानी दबाव के कारण उसका आर्थिक आधार क्षीण हो चुका था।

www.ignited.in

राजनीतिक दबाव ने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की सम्भावनाओं को भी नष्ट कर दिया था। क्षाक्सस क्षेत्र की ओर ससानियों की प्रगति ने इन लोगों को सिन्धु क्षेत्र में ही सीमित कर दिया। और उनके सैनिक विस्तार ने नवीन शासकों को भारत की ओर हाथ फैलाने के लिए बाध्य कर दिया, क्योकि चैथी शताब्दी में समुद्रगुप्त के नेतुत्व में एक महान् शाक्ति का उदय हो चुका था। खतरे के समय में इस गंगाघाटीय शक्ति का आश्रय लिया जा सकता था। इलाहाबाद स्तम्भ अभिलेख में इसी स्थिति को लाक्षणिक ढंग से व्यक्त किया गया है। किन्तु यह सत्य है कि ससानी नरेश अपनी राजनीतिक मांगों का दबाव डालते रहे और किडरवंशी अधिकाधिक भारत की ओर हाथ फैलाते गए। परिणामस्वरूप एक विस्तृत साम्राज्य का विघटन हो गया। गंगा घाटी की सभ्यता का प्रभाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया। खरोष्ठी लिपि के स्थान पर भारतीय ब्राहमी का प्रयोग होने लगा। हिन्दू देवी-देवताओं को प्रमुखतादी जाने लगी। स्वर्ण मुद्राओं का स्थान ससानी रजत मुद्राओं ने ले लिया। व्यापार सन्तुलन नष्ट हो गया। कुषाण सभ्यता जैसे-तैसे जारी रही। अपने नए रूप में गान्धार कला एक छोटे पैमाने पर चलती रही। सभ्यता के स्वरूप में एक मूलभूत परिवर्तन हो चुका था। इसी पूर्ववर्तित स्थिति में हूणों ने सिन्धु क्षेत्र पर अपना आधिपत्य जमाया। वे जीवन की परिवर्ती स्थिति को पुनः स्थापित नहीं कर पाए, क्योकि अब भी समानियों एवं साम्राज्यिक गुप्त नरेशों की ओर से पर्याप्त दबाव पड़ रहे थे। हूणों के पश्चात् तुर्की शाहियों ने उस सभ्यता के टूट तारों को उनके शासनकाल के दौरान जीवन का एक नया स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। घाटी के मैदानों को अपने हाल पर छोड़ दिया गया। मुख्य मागों पर नजर रखते हुए उन्होने पहाड़ियों की चोटियों पर अपने गढ़ स्थापित किए। हमने हाल में डीर एवं स्वात में इस नवीन सुरक्षा प्रणाली का अध्ययन किया है। तुर्की एवं हिन्दू दोनों शाही वंशो ने स्थानीय उपद्रवों एवं विदेशी अतिक्रमणों अपने हितों की रक्षा करने के लिए ऊँची पहाड़ियों पर शाहढेरी का उदय हुआ। इसी प्रकार से पुष्कलावती का प्राचीन नगर भी अब नहीं रहा। यहाँ तक कि पेशावर को भी छोड़ दिया गया और सिन्धु नदी के किनारे हुंड के स्थान पर नई राजधानी की स्थापना की गई। जीवन के स्वरूप का यह परिवर्तन महान कुषाण सभ्यता के पतन एवं अन्त का दुखद वृतान्त है। इसी पतन के काल के दौरान इस्लामी प्रकाश द्वारा उद्घाटित इस नवीन युग में जनता ने स्वयं को पुनरूज्जीवित किया और अपने भविष्य के पुनर्निर्माण के लिए एक नवीन प्रेरणा प्राप्त की।

विशेष सन्दर्भ:

1. ब्रजनन्दनसिंह यादव, 'कलियुग के वर्णन और समाज का प्राचीनकाल से मध्यकाल में संक्रमण', इतिहास, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद की शोध-पत्रिका, दिल्ली, अंक 1, जनवरी, 1992, पृ. 66-99

2. बंगाल में गंगा की मुख्यधारा पद्मा के उत्तर में स्थित प्रदेश पुंड्र और दक्षिण का भाग वंग कहलाता था; विजयेन्द्रकुमार माथुर, ऐतिहासिक स्थानावली, नई दिल्ली, 1969, पृ. 562

3. वही, 4.15.16, मनोहरलाल द्विवेदी, कात्यावन यज्ञ पद्धति विमर्श, दिल्ली, 1988, पृ. 82-84

4. भगवतशरण उपाध्याय, गुप्तकाल का सांस्कृतिक इतिहास, लखनऊ, 1969, पृ. 194-95

5. भगवतशरण उपाध्याय, पूर्वोद्धत, पृ. 198

6. बौद्धधर्म का इतिहास (तारनाथ), पटना, 1971, पृ. 57

7. देवयाज्ञिकं पद्धति, पृ. 131, मनोहरलाल द्विवेदी, पूर्वोकृत, पृ. 85

8. कात्यायन श्रौतसूत्र, 4.15.11

Corresponding Author

Sonu Kumar*

M.Phil in History, MDU, Rohtak

sonukumarsharma415@gmail.com

www.ignited.in